ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 6, June 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

शेखावाटी क्षेत्र के परमहंस संत श्री गणेश नारायण जी के पूजा स्थल का एक अध्ययन

डॉ.कमल महला

सहायक आचार्य,समाजशास्त्र

राजकीय महाविद्यालय,लछमनगढ़

शेखावत कुल के राजपूतों द्वारा शासित भू-खण्ड को शेखावाटी नाम दिया गया। रियासत काल में शेखावतों के साथ कायमखानी, नागड़, पठान आदि वंश के लोग भी इस क्षेत्र में शक्तिशाली शासक रहे हैं। किन्तु 18वीं शताब्दी तक इस क्षेत्र का अधिकतर भू-भाग शेखावत राजपूतों के अधिकार में था। शेखावाटी क्षेत्र के नाम प्राचीन काल में पृथक-पृथक थे। सीकर के आस-पास का क्षेत्र अनन्त गोचर कहा जाता था। इसी प्रकार नरहड़ के आस-पास का क्षेत्र बागड़ कहा जाता था। फतेहपुर और झुंझुनूं के क्षेत्र भी बागड़ नाम से जाने जाते थे।[1]

पुरातन काल में अनेक क्षेत्र पट्टी या वाटी नाम से जाने जाते थे, जैसे तोरावाटी, जोहियावाटी, ईदावाटी, सिंहलवाटी आदि। वाटी या पट्टी उन क्षेत्रों के प्रसिद्ध शासक के नाम पर या उस क्षेत्र के प्रसिद्ध स्थान के नाम पर या शासक के वंश के नाम पर रखा जाता था। कालान्तर में कायमखानियों और शेखावतों का शासन शेखावाटी में परिगणित क्षेत्र के बाहर भी रहा, किन्तु इस आधार पर उन क्षेत्रों को शेखावाटी में नहीं माना जा सकता।

पण्डित रामचन्द्र भगवतीदत्त शास्त्री का मत है कि उत्तर भाग के निवासी जन फतेहपुर, झुंझुनूं, नरहड़, सिंघाना भू-भागों को ही शेखावाटी मानते है। इन्होनें जनधारणा को तर्कसंगत न मानकर, जहाँ-जहाँ शेखावाटी के वंशज शासक अथवा राज्याधिकार रखते थे, उस पूरे भू-भाग को शेखावाटी माना है।[2]

शेखावाटी नाम रखने के पूर्व में इस भू-खण्ड पर अनेक छोटे राजा हुए जिनमें जोड़, निर्वाण, मोर, डाहलिये, चरेल, सांखला, तंवर आदि थे। इन अनेक की राज्य की स्थिति में इस भू-भाग का कोई एक नाम अधिक प्राचीन नहीं है। शेखावतों के अधिकार के पूर्व इस क्षेत्र का आधिपत्य कायमखानियों और पठानों के पास

था। झुंझुनूं के कायमखानियों और पठानों में से प्रत्येक के हाथो में 175 गाँवों का कराधान अधिकार था।

"नैणसी की ख्यात" में हालांकि कायमखानियों के प्रसंग है, पर इस प्रदेश का नाम नहीं दिया गया है। संभव है कि बांकीदास (वि.सं. 1838 से वि.सं. 1890) ने सबसे पहले इस संज्ञा का प्रयोग सर्वप्रथम एक निश्चित भू-भाग के लिए किया था। [3]

"शेखावाटी प्रकाश" ग्रन्थ में शेखावाटी नाम जिस भू-खण्ड के लिए प्रयुक्त किया गया है उसकी स्थिति दर्शायी गयी है। इसके अनुसार शेखावाटी प्रदेश की पूर्व दिशा में ढोसी पर्वत शिखर है, जो सिंघाना ठिकाने में है। इस क्षेत्र के पूर्व में पटियाला व अलवर का राज्य है, पश्चिम में बीकानेर है। उत्तर में पंजाब लुहारू और दक्षिण में आमेर है। अपने मत को ओर अधिक स्पष्ट करते हुए बांडी नदी के उत्तर के भाग को शेखावाटी प्रदेश माना है।[4]

भौगोलिक सीमांकन के अनुसार सांभर ने सिंघाना तक विस्तृत अरावली पर्वत □□□खला के उत्तर में स्थित भूखण्ड को शेखावाटी माना गया है। अनेक बार शेखावाटी का भू-भाग को पूर्ण रूप से रेगिस्तान क्षेत्र मान लिया जाता है। जैसे कि एलपिन्सटन 1808 में दिल्ली से प्रस्थान कर कानोड़ होता हुआ सिंघाना, झुंझुनूं, चूरू के क्षेत्र को पार करता हुआ बीकानेर गया था ने अपनी यात्रा वृत्तान्त में शेखावाटी के प्राकृतिक स्वरुप का वर्णन किया है। इस विवरण के अनुसार शेखावाटी का भू-भाग पूर्णतया मरुभूमि लगता। एलपिन्सटन के अनुसार इस प्रदेश का सौ मील का क्षेत्र ऐसा है जहाँ न मनुष्य है न पानी है न पेड़, पौधे है। वह कहता है कि उसकी शेखावाटी से पूगल तक की यात्रा बालू रेत के ऊँचे टीलों और घाटियों के मध्य हुई। ये टीले ऐसे ही थे जैसे समुद्री किनारों पर हवा के प्रवाह से बन जाते है पर ये अत्यधिक ऊँचे थे। इन टीलों की ऊँचाई 20 से 100 फुट तक थी। उसने कहा कि उसे बताया गया है कि ये टीले वायु वेग से अपना स्थान बदलते रहते है। और ग्रीष्म ऋतु में ये टीले अधिक भंयकर हो जाते है। किन्तु जब इन्हें शीतऋतु में देखा तो ये स्थायी लगे। इन पर फोग बबूल और बेर के पेड़ लगे हुए थे। इन पेड़-पौधों से यह भू-भाग मरूद्यान समप्रतीत हो रहा था। इन टीलों से घिरे छोटे-छोटे गाँव अवस्थित है। ये गाँव छोटे-छोटे छप्पर से आच्छादित छोटी-छोटी दीवार वाली झोंपड़ियों का समूह मात्र प्रतीत होता है।[5]

शेखावाटी के संदर्भ में अनेक गलत भ्रान्त मान्यताएँ विदेशियों के मन में बैठी हुई थी जैसे कि इस क्षेत्र में बहुत से लोग भरूंट नामक घास के बीज खाकर जीवन यापन करते हैं। क्षेत्र आक और फोग से आच्छादित टिलों से

भरा हुआ है। फोग 3 या 4 फुट ऊँची बिना पत्तों वाली वनस्पति है। जिसके फलों को लोग खाते है। इसकी जड़ें खूब मोटी होती है और दूर-दूर तक फैल जाती है, परंतु यह बात पूर्णतया सत्य नहीं है। शेखावाटी कृषि योग्य क्षेत्र है। यहाँ एक फसल उत्पादित की जाती रही है।

स्थान का परिचय- बावलिया बाबा के नाम से विख्यात पंडित गणेश नारायण का स्थान झुंझुनू जिले के चिड़ावा कस्बे में स्थित है। यह झुंझुनू, चिड़ावा तथा खेतड़ी के मार्ग के बीच में स्थित है। इस नगर का संबंध कई नामी उद्योगपतियों से है जिनमें बिरला, डालमिया, खेतान, पोद्दार, पिरामल, सिंघानिया, गोयनका, कनोड़िया प्रमुख है। चिड़ावा में नगर के सामान्य संचालन हेतु नगर पालिका है। चिड़ावा एक उपखंड भी है। चिड़ावा झुंझुनू जिले का एक विकसित तथा समृद्ध कस्बा है। यह नगर दिल्ली तथा जयपुर दोनों ही स्थान से सड़क तथा रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। झुंझुनू-बगड़-चिड़ावा-सिंघाना रोड के माध्यम से यह कस्बा दिल्ली से जुड़ा हुआ है। चिड़ावा का निकटवर्ती हवाई अड्डा दिल्ली में है जिसकी कस्बे से दूरी 220 किलोमीटर है। चिड़ावा में लिंगानुपात 942 प्रति 1000 है (942 महिला प्रति 1000 पुरुष) तहसील की जनसंख्या 628435 है।[6] बावलिया बाबा का मंदिर चिड़ावा शहर के दक्षिण पश्चिम कोने में है। पंडित गणेश नारायण जी का जन्म बुगाला ग्राम के ब्राह्मण परिवार में हुआ था, पंडित गणेश नारायण का जन्म विक्रम संवत 1903, पोष बदी प्रतिपदा, गुरुवार को हुआ था। इनके पिता का नाम घनश्याम दास तथा माता का नाम गौरा देवी था।

मानचित्र 3.3 : चिड़ावा कस्बे में पंडित गणेश नारायण मंदिर

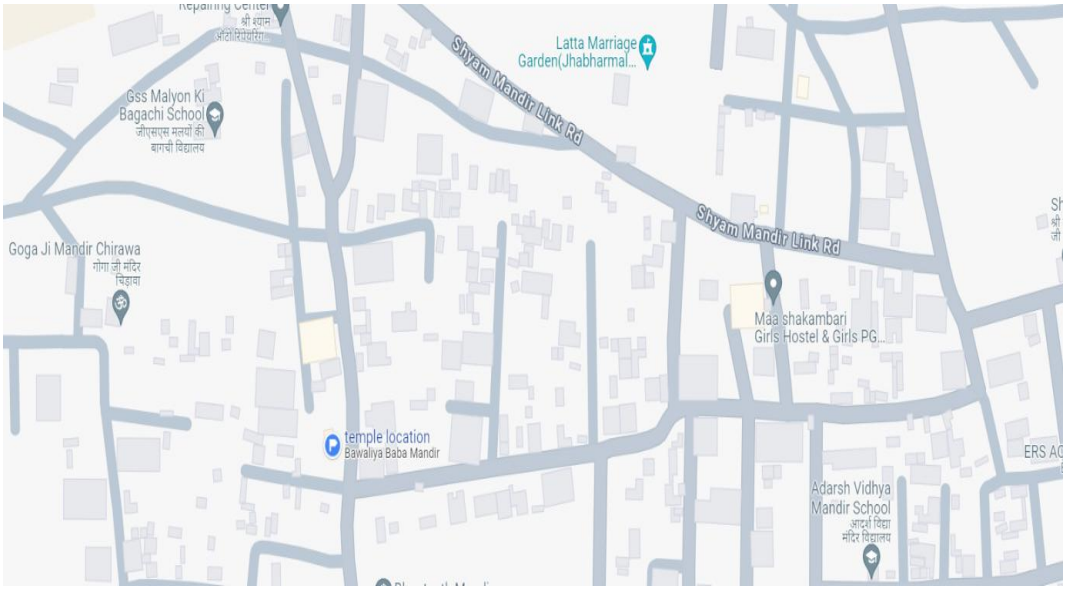

नवलगढ़ में संस्कृत विद्यालय में उनकी शिक्षा हुई थी, बाल्यावस्था में वेद, व्याकरण तथा ज्योतिष का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इनकी पत्नी का नाम स्यान्दी था। प्रचलित कथा के अनुसार नवरात्रि पूजा में व्यवधान उत्पन्न होने से खिन्न होकर, वे गुढ़ागौड़ जी आ गये, जहाँ की पहाड़ियों में उन्होंने तपस्या की, 13 माह बाद वे जसरापुर के श्मशानों की ओर चले गये। आखिर उन्हें चिड़ावा पसन्द आया और वे वहीं रहने लगे, चिड़ावा को शिवनगरी नाम दिया। यहाँ बाबा पूर्ण अघोरी रूप धारण कर चुके थे।[6]

यह काली माँ के उपासक थे। इनकी साधना सिद्ध हुई। कहते है इनकी वाणी सिद्ध हो गयी। बाबा सांसारिक नियमो से परे परमहंस रूप में रहते अर्थात उनको कपड़े पहनने तथा नागरिक शिष्टाचार का ध्यान नहीं रहता था।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 6, June 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

मानचित्र संख्या 3.4 : चिड़ावा कस्बा

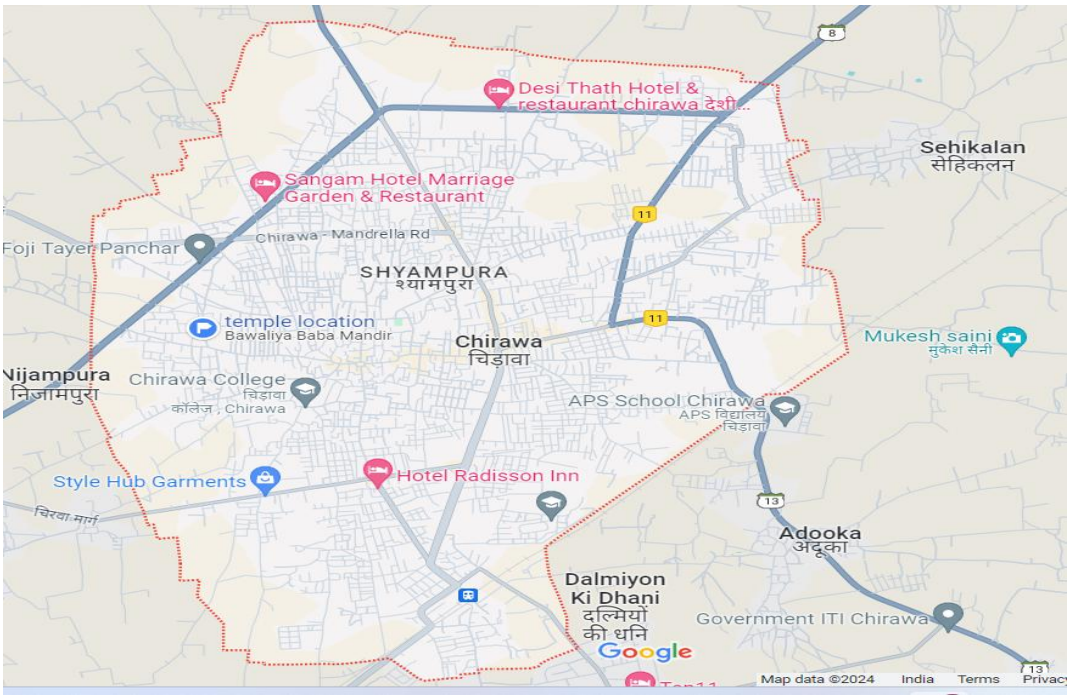

पण्डित गणेश नारायण का वैशिष्ट्य था कि वे सदा नीले रंग का कपड़ा या चादर रखते थे। देह से लम्बे तथा पतले थे। उनके चेहरे पर सफेद दाढ़ी एवं लम्बे बाल थे। बाबा सवर्धा सर्वथा अपरिग्रही थे। सामान्यतया बाबा के शरीर पर एक कपड़ा, हाथ में एक लाठी और दूसरे हाथ में खाने के लिए एक मिट्टी का बर्तन जिसे हांड़ी कहा जाता है, रखते थे। सजने संवरने से उदासीन, सांसारिक राग-द्वेष से मुक्त होने से लोग उन्हें पागल कहते थे। अतः वे बावलियां (पागल) बाबा के नाम से प्रसिद्ध थे।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 6, June 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

चित्र संख्या 3.3: पण्डित गणेश नारायण

बाबा को दाल के बड़े खाने की इच्छा प्रबल रहती थी। भक्त गण इस बात का विशेष ध्यान रखते थे तथा उनकी हाण्ड़ी में बड़े लाकर डाल देते थे। बाबा के पास जो भी खाने के लिए होता उसे वह साथ के कुत्तो या कौओं को खिला देते थे। यह जानवर अमुमन उनके आसपास ही रहते थे।

बावलिया बाबा के साथ अनेक चमत्कार जुड़े हैं। यह इतने सारे है कि प्रत्येक चमत्कार का उल्लेख करना अव्यवहारिक होगा, परंतु वाक सिद्धि के अनेक उद्धरण प्राप्त होते है। भविष्यवक्ता तथा वाक सिद्धि के लिए ही बावलिया बाबा को माना जाता है। संवत 1969 पोष सूदी नवमी, गुरुवार को बाबा ने चिड़ावा के शिवमंदिर में अपने शरीर का त्याग कर दिया।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 6, June 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

चित्र संख्या 3.4: पण्डित गणेश नारायण मंदिर परिसर

यह किवदंती भी हैं कि बाबा का वचन है कि चिड़ावा नगर में कोई गुण्डा या बदमाश नहीं होगा तथा नगर में सुअर जानवर नहीं होगा। कहते है बाबा के वचन आज भी सत्य है। मंदिर में बावलिया बाबा की प्रतिमा युक्त पुजा केन्द्र है। बाबा ने चिड़ावा में रहते हुए अनेक चमत्कार दिखाए। लेकिन पिलानी के सेठ जुगल किशोर बिड़ला पर उनकी अटूट कृपा रही। पिलानी से रोज चिड़ावा आकर बाबा के दर्शन किये बिना भोजन नहीं करने एवं उनकी सेवाभाव से खुश होकर बाबा ने बिड़ला को करणी वरणी हमेशा चालू रहने का आर्शीवाद दिया। बिड़ला ने कई बार उनसे पिलानी चलने का आग्रह भी किया, लेकिन वे चिड़ावा के भगीणिये जोहड़ से कभी आगे नहीं गए। इसी कारण बिड़ला ने उनकी याद में जोहड़ खुदवाकर एक घाट बनवाया तथा उस पर एक बहुत ऊँची गणेश लाट नाम की स्तूप भी बनवाई।[7]

संदर्भ

सिंह, हरनाथ. (1970). शेखावत्स एण्ड देयर लैण्डस्. डूण्डलोद : प्रतीक प्रकाशन, सीकर, पृ. 124
शास्त्री, रामचन्द्र. (1955). शेखावाटी प्रकाश. सीकर : उमेश प्रकाशन,
पृ. 35
नैणसी री ख्यात पत्र (पत्र 12 व 16).
शास्त्री, रामचन्द्र. (1955). शेखावाटी प्रकाश. सीकर : उमेश प्रकाशन,
पृ. 4
राजस्थान राज्य अभिलेखागार. विल्स रिपोर्ट का उत्तर, बीकानेर, पृ. 50

1. शर्मा, सागरमल. (1999). *राजस्थान के लोक देवता.* सीकर : शेखावाटी शोध प्रतिष्ठान, पृ. 65

2. नागर, नन्दा. (1987). *मरु भारती.* पिलानी : बिरला शोध ट्रस्ट,